जीवन विज्ञान इन्टरनेशनल शिविर

आरूषी एवं आरती ने दिखाये आश्चर्य चकित करने वाले आसन

सरदारशहर 13 नवज़्बर, 2010

रबड़ की तरह मुड़ता शरीर, धुन के साथ सधे हुए स्टेप, छोटी वय में पसीने छुड़ा देने वाले कड़े आसन, फिजाओं में गुंजती ओम अर्हम् की करतल ध्वनि यह दृश्य है तेरापंथ भवन में आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में चल रहे जीवन विज्ञान इन्टरनेशनल शिविर के समापन का। इस शिविर में इन्दौर जिले के राजेन्द्रनगर गांव से भाग लेने आई 19 वर्षीय आरतीपाल एवं दिल्ली की 10 वर्षीय आरूषी ने आश्चर्य चकित करने वाले आसनों का प्रदर्शन कर सबको दांतों तले अंगुली दबाने के लिए मजबूर कर दिया। देखने वाले जनमानस के यही बोल थे कि भारतीय मीडिया विदेशियों को कड़े आसन करते हुए दिखाता है पर भारत में उससे भी कहीं ज्यादा प्रतिभा रखने वाले बच्चे हैं, जिनको मीडिया जानता भी नहीं है। भारत की प्रतिभा गांवों में, गरीबी में और पहुंच की कमी के कारण दबकर रह जाती है। मूलचन्द विकास कुमार मालू के प्रोयाजकत्व से 8 से 13 नवज़्बर तक चले इस जीवन विज्ञान शिविर में विभिन्न प्रयोगों से अपने जीवन की दिशा बदलने की चर्चा करने वाली आरती पाल ने 'वन्दे मातरम' गीत की धुन पर कड़े से कड़े 23 आसनों का प्रदर्शन कर लोगों एवं मीडिया जगत को भारत की प्रतिभाओं पर गर्व करने का संदेश दिया है। आरतीपाल ने यह साबित कर दिया है कि जीवन विज्ञान सर्वांगीण विकास की शिक्षा है, जिससे न केवल शरीर लचीला किया जा सकता है बल्कि मन को भी लचीला किया जाता है। कक्षा 6 से जीवन विज्ञान के प्रयोग करने वाली आरतीपाल गरीब परिवार से संबंध रखती है। उनका कहना है कि मुझे आचार्य महाप्रज्ञ के आशीर्वाद एवं मेरे गुरु आत्माराम तिवारी के मार्गदर्शन ने नई सोच दी एवं विकास के नये आयाम खोले हैं। मैंने जीवन विज्ञान के कारण ही गरीबी के बीच पलते हुए भी अपने आत्मविश्वास को कम नहीं होने दिया। मेरे माता-पिता अशिक्षित हैं पर मुझे संतों का आशीर्वाद निरंतर मिला। मुझे आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण की जानकारी मिली तो दिनभर आंखों से आंसु नहीं रूक पा रहे थे। इस शिविर में आचार्य महाश्रमण से वैसा ही आशीर्वाद पाकर मैं धन्य हो गई हूं।

सुमेरमल जैन पब्लिक स्कूल दिल्ली की 10 वर्षीय छात्रा आरूषी का मानना है कि जीवन विज्ञान ने मेरे व्यवहार को सुन्दर बनाया है। मुझे खुशी इस बात की है कि जीवन विज्ञान की शिक्षा देने वाली स्कूल में पढ़ती हूं। इसी कारण मैंने अपने शरीर को लचीला बना लिया और कड़े आसनों को बड़ी सहजता से कर लेती हूं। आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य और मुनि किशनलाल के निर्देशन में हमने इस शिविर में अपनी शक्तियों को इस्तेमाल में लेने की कला को जाना है। दिल्ली की ही 15 वर्षीय मान्या बक्षी ने भी अनेक आसनों को दिखाकर सबको मोह लिया। उनका कहना था कि जीवन विज्ञान ने जीने की कला सिखाई है। इससे हम देश का नाम रोशन करेंगे। आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति की तरफ से अति कठिन आसन करने वाली इन बालिकाओं को प्रतिक चिन्ह देकर सज़्मानित किया गया। आचार्य महाश्रमण ने बालिकाओं के आसन प्रदर्शन को विस्मयकारी बताते हुए कहा कि शरीर को साधना भी एक कला है। इस कला का निरंतर अज़्यास कर हम इच्छित मंजिल को प्राप्त कर सकते हैं।